ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 7 & Issue 4 (October 2025)

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n4.40

वैश्विक मंदी: कारण एवं निवारण

डॉ0 कुमार गौरव

असिस्टेंट प्रोफेसर,

अर्थशास्त्र विभाग, राजेन्द्र महाविद्यालय,

छपरा, सारण, बिहार।

सारांश

वैश्विक मंदी एक गंभीर आर्थिक स्थिति है, जिसका असर कई देशों पर पड़ता है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे वित्तीय संकट, व्यापार युद्ध, और महामारी। मंदी के समय आर्थिक गतिविधियां घट जाती हैं, बेरोजगारी बढ़ जाती है और लोगों की आय कम हो जाती है। वित्तीय संकट वैश्विक मंदी का एक बड़ा कारण है। 2008 की वैश्विक वित्तीय मंदी इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जो अमेरिका से शुरू होकर पूरी दुनिया में फैल गई।[1] इसके अलावा, व्यापार युद्ध भी मंदी का कारण बन सकते हैं। जब देश एक–दूसरे पर टैरिफ लगाते हैं, तो व्यापार कम होता है, जिससे विकास धीमा हो जाता है। हाल में, कोविड–19 महामारी ने भी वैश्विक अर्थव्यवस्था को बहुत नुकसान पहुँचाया है। वैश्विक मंदी के प्रभाव भी बहुत गहरे होते हैं। बेरोजगारी बढ़ जाती है, क्योंकि कंपनियां कर्मचारियों को निकालने के लिए मजबूर होती हैं। आय में कमी आती है, जिससे लोग अपनी नौकरी या आय खो देते हैं और गरीबी बढ़ जाती है। मंदी के दौरान लोगों की जीवन स्तर नीचे गिर जाता है। इसके साथ ही, सामाजिक अशांति भी बढ़ सकती है, क्योंकि लोग सरकार से कार्रवाई की उम्मीद करते हैं। वैश्विक मंदी एक स्थायी स्थिति है, जो अनेक देशों को प्रभावित करती है।

मुख्य शब्द – वैश्विक मंदी, अर्थव्यवस्था, आर्थिक चुनौती, उपभोक्ता और निवेशक, वित्तीय संकट, बेरोज़गारी, दिवालिया।

ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com
The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 4 (October 2025)

प्रस्तावना

वैश्विक मंदी एक लंबे समय तक चलने वाली आर्थिक कमी है, जिसमें कई देशों की अर्थव्यवस्थाएँ एक साथ कमजोर हो जाती हैं। इसके मुख्य कारणों में युद्ध, संपत्ति की कीमतों में कमी, ऊर्जा और वस्तुओं की मूल्य वृद्धि, मांग और उपभोग में कमी, तथा उपभोक्ता और निवेशक विश्वास में कमी शामिल हैं। युद्ध से अर्थव्यवस्थाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो अक्सर व्यापार और निवेश को रोकता है। परिसंपत्तियों के मूल्य में गिरावट लोगों और व्यवसायों के लिए एक गंभीर आर्थिक चुनौती बन जाती है। ऊर्जा और वस्तुओं की बढ़ती कीमतें भी जीवनयापन को महंगा बनाती हैं, जिससे लोगों की खरीदारी शक्ति कम होती है। मांग और उपभोग में कमी से व्यापारिक गतिविधियाँ घटती हैं, जो रोजगार के अवसरों को भी प्रभावित करती हैं। यही नहीं, जब उपभोक्ता और निवेशक विश्वास में कमी आती है, तो लोग खर्च करने या निवेश करने से कतराते हैं, जिससे आर्थिक विकास और भी धीमा होता है।

इस प्रकार, वैश्विक मंदी एक जटिल स्थिति है, जो विभिन्न कारणों के संयोजन से उत्पन्न होती है और कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करती है। यह आर्थिक स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा बन सकती है, और इसके प्रभाव का सामना करने के लिए कड़े आर्थिक उपायों की आवश्यकता होती है। हालाँकि आर्थिक मंदी के अपने नुकसान हैं, लेकिन यह अर्थव्यवस्थाओं के बीच धन संतुलन स्थापित करने या बनाए रखने में लाभकारी हो सकती है। जब किसी देश के पास धन और संसाधनों की अधिकता होती है और अन्य देशों के पास इनका पर्याप्त अभाव होता है, तो इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था में असंतुलन पैदा होता है। वैश्विक आर्थिक मंदी कुछ देशों के पास मौजूद धन और संसाधनों की अधिकता को बेअसर करने में मदद करती है, जिससे दुनिया भर के बाकी देशों की वित्तीय स्थिति स्थिर और संतुलित होती है। यहाँ 1900 के बाद से विश्व में आई कुछ प्रमुख मंदी और उनके कारण दिए गए हैं :–

महामंदी (1929–1939) : महामंदी संयुक्त राज्य अमेरिका में शेयर बाजार में आई गिरावट के कारण हुई थी, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक आर्थिक मंदी आई। इस महामंदी की विशेषताएँ उच्च बेरोजगारी दर, कम आर्थिक उत्पादन और अपस्फीति थीं।[2]

1970 का दशक ऊर्जा संकट : 1970 के दशक का ऊर्जा संकट पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) द्वारा वैश्विक तेल प्रतिबंध के कारण उत्पन्न हुआ था, जिसके कारण तेल की कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस संकट के परिणामस्वरूप उच्च मुद्रास्फीति दर और वैश्विक आर्थिक मंदी आई।

1980 के दशक की शुरुआत में मंदी : 1980 के दशक की शुरुआत में आई मंदी कई कारकों के संयोजन से उत्पन्न हुई थी, जिनमें उच्च मुद्रास्फीति दर, उच्च ब्याज दरें और उपभोक्ता खर्च में गिरावट शामिल थी। इस मंदी के कारण बेरोजगारी दर में वृद्धि हुई और आर्थिक उत्पादन में गिरावट आई।

ब्लैक मंडे (1987) : ब्लैक मंडे 19 अक्टूबर, 1987 को हुआ एक वैश्विक शेयर बाजार पतन था। यह पतन कई कारकों के संयोजन से हुआ था, जिनमें प्रोग्राम ट्रेडिंग, उच्च मूल्यांकन और उपभोक्ता विश्वास में गिरावट शामिल थी। इस पतन के कारण वैश्विक आर्थिक मंदी आई।

डॉट–कॉम बुलबुला (2000–2002) : डॉट–कॉम बुलबुला इंटरनेट–आधारित कंपनियों में निवेश से प्रेरित अमेरिकी प्रौद्योगिकी शेयरों के मूल्यांकन में तेज़ी से वृद्धि के कारण पैदा हुआ था। यह बुलबुला 2001 और 2002 के बीच फट गया, जिससे बाज़ार में भारी गिरावट आई। यह बुलबुला सिर्फ़ आशावाद पर आधारित था और 2000 में फूट गया।

वैश्विक वित्तीय संकट (2007–2009) : वैश्विक वित्तीय संकट कई कारकों के संयोजन से उत्पन्न हुआ, जिनमें सबप्राइम बंधक ऋण, उच्च स्तर का ऋण और वित्तीय क्षेत्र में विनियमन का अभाव शामिल है। इस संकट के कारण वैश्विक आर्थिक मंदी, उच्च बेरोजगारी दर और आर्थिक उत्पादन में गिरावट आई।

2018–2019 वैश्विक मंदी : 2018–2019 की वैश्विक मंदी दुनिया भर के कई देशों में अत्यधिक समन्वित आर्थिक और वित्तीय व्यवधानों की विशेषता रही। यह मंदी विभिन्न कारकों से प्रभावित हुई, जिनमें बढ़ती व्यापार बाधाएँ और उससे जुड़ी अनिश्चितता, बड़ी उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में देश–विशिष्ट कमज़ोरी, भू–राजनीतिक तनाव, कठिन होती वित्तीय स्थितियाँ और कुछ अर्थव्यवस्थाओं में मंदी शामिल हैं।

कोविड –19 (2020) कोविड –19 महामारी ने वैश्विक मंदी को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दुनिया के कई हिस्सों में लॉकडाउन के कारण आर्थिक गतिविधियाँ ठप हो गईं। यह स्थिति भी मांग की कमी का परिणाम थी। लॉकडाउन के कारण परिवहन, पर्यटक, और खुदरा क्षेत्रों में भारी नुकसान हुआ।[3]

उपर्युक्त वैश्विक मंदी ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं जिनका दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं, व्यवसायों और व्यक्तियों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। ये वैश्विक अर्थव्यवस्था के अंतर्संबंध और वैश्विक स्तर पर आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए समन्वित नीतिगत प्रतिक्रियाओं के महत्व को रेखांकित करती हैं।

वैश्विक मंदी कारण

वैश्विक मंदी के कई कारण हैं। इनमें युद्ध, परिसंपत्ति मूल्य में गिरावट, ऊर्जा और वस्तुओं की कीमतों का गिरना, मांग में कमी, खपत में कमी, मजदूरी में कमी, और उपभोक्ता एवं निवेशक विश्वास में गिरावट शामिल हैं। ये सभी कारण मिलकर मंदी की स्थिति पैदा करते हैं। इसके चलते अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वैश्विक मंदी के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित है –

आर्थिक संकट और वित्तीय पतन – वित्तीय बाजारों में बड़ी गिरावट और बैंकों का दिवालिया होना आर्थिक मंदी को और बढ़ा सकता है। इस तरह की स्थिति आर्थिक संकट और वित्तीय पतन का कारण बन सकती है। जब बाजार गिरता है, तो यह निवेशकों के विश्वास को कम कर सकता है। बैंकों की विफलता से वित्तीय प्रणाली में अस्थिरता आती है और आम लोगों को भी परेशानी हो सकती है। सामाजिक और आर्थिक जीवन पर इसका असर गहरा हो सकता है। यह नौकरियों में कटौती, व्यापारों के बंद होने और लोगों की खर्च करने की क्षमता में कमी ला सकता है। आर्थिक वृद्धि को और बाधित करता है। इसके अलावा, यह स्थिति विभिन्न उद्योगों में दबाव पैदा कर सकती है और अंततः पूरे देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है। इन मौजूदा हालात में उचित कदम उठाना महत्वपूर्ण है। इससे न केवल बाजार की स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है, बल्कि लोगों के जीवन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को भी कम किया जा सकता है।[4]

ऊर्जा और वस्तुओं की कीमतों में उतार–चढ़ाव – ऊर्जा की कीमतें, चाहे वह बढ़ें या घटें, वैश्विक मंदी का एक बड़ा कारण बन सकती हैं। एक उदाहरण 1979 का तेल संकट है, जिसने दुनिया भर में आर्थिक कठिनाइयाँ पैदा कीं। जब ऊर्जा की कीमतें बहुत अधिक होती हैं, तो इसका असर घरों और व्यवसायों पर पड़ता है, जिससे खर्चे बढ़ जाते हैं और विकास रुक जाता है। दूसरी ओर, अगर कीमतें अचानक गिर जाती हैं, तो यह भी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकती है। 1979 का तेल संकट यह दिखाता है कि कैसे अचानक ऊर्जा की कीमतें बढ़ने से आपूर्ति में बाधा आई और इसे वैश्विक मंदी की ओर ले गया। ऊर्जा की कीमतें न केवल अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं, बल्कि वे उपभोक्ता विश्वास और निवेश पर भी असर डालती हैं। जब लोग महंगी ऊर्जा का सामना करते हैं, तो वे अपने खर्चों में कटौती करने लगते हैं, जिससे उत्पादकता में कमी आती है। इस प्रकार, ऊर्जा की कीमतों में उतार–चढ़ाव एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतक हैं।

मांग में कमी – उपभोक्ता और निवेशकों का विश्वास कम होने से मांग में कमी आती है। जब मांग घटती है, तो यह उत्पादन और आर्थिक वृद्धि को प्रभावित करती है। लगातार विश्वास की कमी से बाजार की स्थिरता को गंभीर नुकसान होता है। यह स्थिति सभी क्षेत्रों, जैसे व्यापार, निवेश और उपभोक्ता खर्च, पर असर डालती है। उपभोक्ता अपने खर्चों में कटौती करने लगते हैं, जबकि निवेशक नई परियोजनाओं या व्यापारों में पैसे निवेश करने से हिचकते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि कंपनियाँ उत्पादन कम करने लगती हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ धीमी हो जाती हैं। जब उत्पादन घटता है, तो कार्यस्थल पर रोजगार के अवसर भी कम होते हैं, जिससे बेरोजगारी बढ़ती है और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

व्यापार और भू–राजनीतिक तनाव – व्यापार युद्ध, जैसे टैरिफ लगाना, और अंतर्राष्ट्रीय भू–राजनीतिक तनाव वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता को बढ़ा सकते हैं। ये घटनाएँ देशों के बीच आर्थिक संबंधों को प्रभावित करती हैं, जिससे व्यापार करना मुश्किल हो जाता है। व्यापार युद्ध के चलते एक देश दूसरे पर टैरिफ बढ़ा सकता है, जिसका सीधा असर उन दोनों देशों के व्यापार पर पड़ता है। ऐसा करने से आर्थिक स्थिति और भी कमजोर हो सकती है। भू–राजनीतिक तनाव भी इसी तरह काम करता है। जब देशों के बीच राजनीति में तनाव होता है, तो व्यापार पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे कंपनियों की योजनाएँ प्रभावित होती हैं और निवेशक अनिश्चितता के कारण अपने निर्णय लेने में हिचकिचाते हैं। इन दोनों कारणों के सम्मिलित प्रभाव से समग्र आर्थिक स्थिरता पर खतरा मंडराता है। इससे लोगों की नौकरियाँ भी प्रभावित हो सकती हैं और बाजार में मूल्य अस्थिरता बढ़ सकती है। व्यापार युद्ध और भू–राजनीतिक तनाव के कारण आमतौर पर घरेलू बाजार में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। कीमतें बढ़ जाती हैं, जिससे उपभोक्ताओं पर अधिक बोझ पड़ता है। इसके अलावा, इससे सप्लाई चेन में भी रुकावट आती है। जैसे–जैसे टैरिफ बढ़ते हैं, उत्पाद की लागत भी बढ़ती है, जिससे ग्राहकों के लिए सामान खरीदना महंगा हो जाता है। अगर यह स्थिति बनी रहती है, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था को बड़े खतरे का सामना करना पड़ सकता है और कई देशों में आर्थिक वृद्धि रुक सकती है।[5]

इस तरह ऋण उपलब्धता में कमी से लेकर बेरोज़गारी दर में वृद्धि तक मंदी किसी भी देश पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। और जब वैश्विक मंदी होती है, तो इसका प्रभाव एक साथ कई देशों पर पड़ता है। वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण बेरोज़गारी दर बढ़ रही है और मज़दूरी में गिरावट आ रही है। कंपनियाँ खुद को बढ़ते घाटे से बचाने की कोशिश में मज़दूरों की छंटनी कर रही हैं। नतीजतन, बढ़ती बेरोज़गारी दर और कम मज़दूरी उपभोक्ताओं को खर्च कम करने पर मजबूर कर रही है, जिससे मंदी का असर और बढ़ रहा है। इसके अलावा, निवेशक अपने निवेश रोककर रखते हैं और मौजूदा निवेशों को भुना लेते हैं, जिससे जोखिम भरी संपत्तियों की कीमतें गिर जाती हैं। नतीजतन, वित्तीय संस्थानों को बड़े पैमाने पर मंदी का सामना करना पड़ता है जो उनकी निवल संपत्ति को खा जाता है और कभी–कभी दिवालिया होने की स्थिति पैदा कर देता है। इसके अलावा, सोने जैसी सुरक्षित संपत्तियों की कीमतों में भी बढ़ोतरी देखी जाती है क्योंकि निवेशक अपनी पूंजी की सुरक्षा के लिए इन संपत्तियों की तलाश में रहते हैं।

निवारण हेतु उपाय

वैश्विक मंदी रोकने हेतु निम्नलिखित उपाय किए जा सकते है –

मौद्रिक और राजकोषीय नीतियाँ – सरकारें और केंद्रीय बैंक आर्थिक नीतियों को सख्त कर सकते हैं, जैसे ब्याज दरों में बढ़ोतरी करना। यह कदम आमतौर पर महंगाई को नियंत्रित करने के लिए उठाया जाता है। जब ब्याज दरें बढ़ती हैं, तो उधार लेना महंगा हो जाता है और बचत पर अधिक ब्याज मिलता

है। इससे लोग खर्च कम करते हैं और बचत की ओर प्रेरित होते हैं, जिसका उद्देश्य अर्थव्यवस्था में धन का प्रवाह सीमित करना और मूल्य स्थिरता बनाए रखना होता है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग – देशों को व्यापार बाधाओं को कम करने और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणालियों को स्थिर करने के लिए सहयोग करना चाहिए। यह न केवल व्यापार को बढ़ाएगा, बल्कि आर्थिक स्थिरता भी लाएगा। सभी देशों को मिलकर अपनी अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करना चाहिए ताकि वैश्विक व्यापार सुगम हो सके।

वित्तीय विनियमन – वित्तीय क्षेत्र में उचित विनियमन बाजारों को अत्यधिक जोखिम उठाने से रोकने में मदद कर सकता है। यह सुनिश्चित करता है कि वित्तीय गतिविधियों का संचालन एक सुरक्षित और नियंत्रित तरीके से हो। सही नियम और कानून आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में मदद करते हैं और निवेशकों के लिए एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करते हैं। उचित विनियमन के बिना, बाजार में अस्थिरता बढ़ सकती है, जिससे लोगों के निवेश पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

आर्थिक विविधता – अर्थव्यवस्थाओं में विविधता लाना जरूरी है ताकि किसी भी एक क्षेत्र पर निर्भरता कम हो सके। यदि हम केवल एक ही क्षेत्र पर निर्भर रहते हैं, तो हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसीलिए विभिन्न क्षेत्रों को शामिल करना और उन्हें विकसित करना बहुत महत्वपूर्ण है। इस तरह की विविधता आर्थिक स्थिरता लाने में मदद करती है।[6]

इस प्रकार सरकारें और केंद्रीय बैंक मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों को सख्त कर सकते हैं, जैसे ब्याज दरों को बढ़ाना, जिससे महंगाई को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। बढ़ती ब्याज दरों से उधार लेना महंगा हो जाता है और लोग खर्च कम कर बचत की ओर बढ़ते हैं। देशों को व्यापार बाधाओं को कम करने और वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए सहयोग करना चाहिए, जिससे व्यापार बढ़ता है और आर्थिक स्थिरता आती है। वित्तीय विनियमन बाजारों को जोखिम से बचा सकता है और निवेशकों के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करता है। आर्थिक विविधता भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह किसी एक क्षेत्र पर निर्भरता को कम करती है, जिससे स्थिरता बढ़ती है।

निष्कर्ष

वैश्विक मंदी एक गंभीर आर्थिक स्थिति है जो कई देशों को प्रभावित करती है। इसके कारणों में वित्तीय संकट, व्यापार युद्ध, और महामारी शामिल हैं। मंदी के दौरान आर्थिक गतिविधियां कम होती हैं, बेरोजगारी बढ़ती है, और लोगों की आय घटती है। वैश्विक मंदी के कई कारण होते हैं, जैसे युद्ध, परिसंपत्ति मूल्य में गिरावट, और ऊर्जा की कीमतों में बदलाव। मांग में कमी, मजदूरी में गिरावट, और उपभोक्ता के विश्वास का कम होना भी प्रभाव डालते हैं। आर्थिक संकट और वित्तीय पतन नौकरी में कटौती और व्यवसायों के बंद होने का कारण बन सकते हैं। भू–राजनीतिक तनाव और व्यापार युद्ध भी

आर्थिक अनिश्चितता बढ़ाते हैं। वैश्विक मंदी रोकने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं। सरकारें और केंद्रीय बैंक ब्याज दरें बढ़ा सकते हैं, जिससे महंगाई नियंत्रित होती है। देशों को अंतर्राष्ट्रीय सहयोग करना चाहिए ताकि व्यापार बाधाओं को कम किया जा सके। वित्तीय विनियमन से बाजारों को जोखिम से बचाने में मदद मिलती है। अंत में, आर्थिक विविधता जरूरी है ताकि किसी एक क्षेत्र पर निर्भरता कम हो। इससे स्थिरता बढ़ती है और अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

संदर्भ

1. Krugman, P. (2009). The return of depression economics and the crisis of 2008. New York: W. W. Norton & Company.
2. Friedman, M. (1968). The Role of Monetary Policy. American Economic Review, 58(1), 1-17.
3. World Bank. (2021). Global Economic Prospects. Washington, DC: World Bank Publications.
4. World Bank. (2023). Global Economic Prospects. Washington, DC: World Bank Publications.
5. https://www.zinkpot.com/?page=news&news=global-recession.
6. https://www.wallstreetmojo.com/global-recession/.